तर्ज : इक प्यार नगमा है, मौजो की खानी है, जिंदगी और कुछ भी नही तेरी मेरी कहानी है

वो वक्त भी देखा है ये वक्त का कहना है

पहले की तरह संतो मिलजुल के रहना है.....॥धृ॥

जो ख्वाव अधुरे है वो पुरे करने है

हरदेव के सपनों को अभी और निखरने है

नए मांझी का हमने [2] अब सुनना कहना है .....॥१॥

आपस का प्यार हमें अब और बढाना है

किसी वहम भुलेखे में हरगिज नही आना है

बहकावे में आकर हमको नही बहना है .....॥२॥

मुश्कील है घडी संतो पर सब्र जरूरी है

मालिक की मर्जी तो होती रही पुरी है

अब "शौक" गिला करना और ना कुछ कहना है .....॥३॥